श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

मार्च - 2026
अंक-4

विक्रम संवत् - 2083
वीर संवत् - 2052

सम्पादक - डॉ. अमित जैन

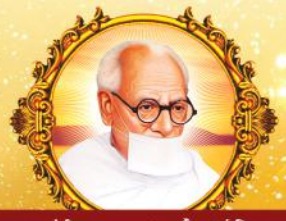

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

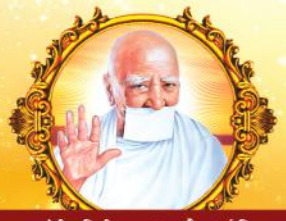

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

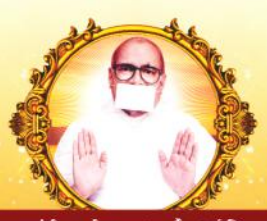

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

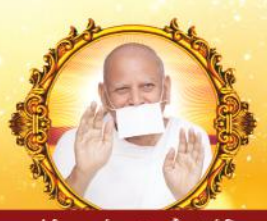

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

Address
Here

प्रभु महावीर के कल्याणकों से अध्यात्म की प्रेरणा लें

- युग प्रधान आचार्य
सम्राट् पूज्य
डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

(गतांक से आगे)

केवल ज्ञान कल्याणक और तीर्थ के संस्थापक : प्रभु महावीर को निरंतर साढ़े बारह वर्षों की साधना के बाद शुक्ल ध्यान को अखण्ड साधना 48 मिनट पार कर कई और उन्होंने अपने घाती कर्म-ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोह व अन्तराय कर्म क्षय कर केवल ज्ञान, केवल दर्शन को प्राप्त किया। अपना अनंत जन्मों का महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण कर वे सर्वज्ञ सर्वदर्शी बन गये। उन्होंने तीन लोक, तीन काल को हस्तामलकवत् देख-ज्ञान लिया। उन्होंने तीर्थ की स्थापना की जिसमें उन जीवों को सम्मिलित किया, जो अपने जीवन का कल्याण करना चाहते थे। तीर्थ में उन्होंने साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका के रूप में सम्मिलित किया जिसे हम चतुर्विध संघ कहते हैं, जिसके संस्थापक भगवान होते हैं। वर्तमान तीर्थ के संस्थापक प्रभु महावीर हैं।

हमारी साधना : हम सभी तीर्थवासियों को अपने जीवन के कल्याण के लिए समय का सदुपयोग करना है। सबसे पहले स्वरूप का बोध प्राप्त करें, मैं कौन हूँ? मेरा स्वरूप क्या है? मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? अपने अस्तित्व पर श्रद्धा परिपक्व करते हुए सम्यक्त्व को क्षायिक सम्यक्त्व बनाए। व्रतों ग्रहण कर हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह से निवृत्त अप्रमत्त होकर 24 घण्टे अपने जीवन को महत्व देकर स्वभाव में रहकर कषाय से अकषाय की ओर बढ़े तथा मन, वचन, काया से पार जाकर कर्म क्षय करते हुए अपने जीवन के कल्याण में समय व्यतीत करें। तब ही प्रभु महावीर का जन्म कल्याणक मनाना सार्थक होगा।

जो साधक इस भव को सार्थक बना कर प्रभु महावीर की तरह अपने जीवन का कल्याणक चाहते हैं वे आत्म ध्यान से भेद विज्ञान से शुक्ल ध्यान की ओर बढ़ने के लिए आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ में प्रवेश कर प्रभु महावीर की मूल भावना के प्रयोग कर जीवन सफल बनायेंगे तो जन्म कल्याणक सार्थक होगा।

धर्म तो सब कहें, धर्म न जाने कोय ।
निर्मल मन का आचरण, सत्य धर्म है सोय ।।

शाश्वत मानवता का वैश्विक पथ

अध्यक्षीय

वर्धमान का आलोक और हमारा उत्तरदायित्व

- अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष - जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail : ajvk1973@gmail.com

अनादिकाल की प्रवाहमान समय सरिता में कुछ क्षण ऐसे आते हैं, जो संपूर्ण मानवता की चेतना को झकझोर कर उसे नव-आलोक से भर देते हैं। आज हम उसी अलौकिक उल्लास के साक्षी बन रहे हैं। श्रमण भगवान महावीर स्वामी का 2625वाँ जन्म कल्याणक केवल एक ऐतिहासिक तिथि नहीं, बल्कि आत्म-साक्षात्कार और वैश्विक शांति का एक जीवंत महापर्व है। इस पुनीत अवसर पर समस्त जैन समाज और विश्व-मानवता को हृदय की गहराइयों से मंगल बधाई शुभकामनाएं।

आज दुनिया जिस मुकाम पर खड़ी है, वहाँ एक ओर तकनीकी पराकाष्ठा है, तो दूसरी ओर वैचारिक खोखलापन। युद्ध की विभीषिका, बढ़ती असहिष्णुता, प्रकृति का अनियंत्रित दोहन और मानसिक अवसाद (Depression) ने आधुनिक मनुष्य को भीतर से रिक्त कर दिया है। ऐसे कोलाहलपूर्ण समय में महावीर का दर्शन किसी 'म्यूजियम की वस्तु' नहीं, बल्कि आज की जटिल समस्याओं का 'सटीक समाधान' (Clinical Solution) बनकर उभरता है।

अहिंसा से विश्व-बंधुत्व : आज जब मिसाइलों की गूँज में संवाद दब गया है, तब महावीर की 'अहिंसा' केवल 'न मारना' मात्र नहीं है। यह 'जीओ और जीने दो' की वह सक्रिय अवधारणा है जो घृणा को प्रेम से जीतने का साहस देती है। वैश्विक संघर्षों का समाधान युद्ध के मैदान में नहीं, बल्कि अहिंसक हृदय की करुणा में निहित है।

अपरिग्रह और पर्यावरणीय संतुलन : 'क्लाइमेट चेंज' और 'ग्लोबल वार्मिंग' असल में मानव के अनियंत्रित लालच के परिणाम हैं। महावीर का 'अपरिग्रह' (Non & Possessiveness) ही वास्तविक 'सस्टेनेबल लिविंग' है। जब हम अपनी आवश्यकताओं को संयमित करते हैं, तभी हम प्रकृति और आने वाली पीढ़ियों को जीवन का अधिकार दे पाते हैं।

अनेकांतवाद - लोकतंत्र की आधारशिला : आज की सबसे बड़ी समस्या 'वैचारिक कट्टरता' है। 'अनेकांतवाद' हमें सिखाता है कि सत्य के कई पहलू हो सकते हैं। यदि हम दूसरों के दृष्टिकोण को सम्मान देना सीख लें, तो समाज में बढ़ती असहिष्णुता स्वतः समाप्त हो जाएगी। यही सिद्धांत लोकतंत्र और शांतिपूर्ण सह - अस्तित्व (Co-Existence) की सबसे बड़ी मजबूती है।

युवा पीढ़ी और व्यवहारिक अनुसरण : युवा साथियों से मेरी विशेष अपील है कि महावीर का दर्शन केवल स्तुति-गान के लिए नहीं, बल्कि 'प्रयोग' के लिए है। हमारे समाज के युवाओं को इन शाश्वत मूल्यों को अपनी आधुनिक जीवनशैली का हिस्सा बनाना होगा। जब तक महावीर के विचार हमारे व्यवहार और व्यापार में नहीं उतरेंगे, तब तक उत्सव की सार्थकता अधूरी है।

संकल्प का समय : आइये, इस 2625वें जन्म कल्याणक पर हम अपने भीतर विवेक का दीप प्रज्वलित करें। हम संकल्प लें कि हम महावीर के सिद्धांतों के 'प्रवक्ता' ही नहीं, बल्कि 'प्रवर्तक' बनेंगे। चतुर्विध संघ के प्रत्येक सदस्य श्रमण - श्रमणी, श्रावक - श्राविका, को इस पावन प्रसंग पर पुनः अनंत मंगलकामनाएं। प्रभु महावीर का शासन और उनकी करुणा जन-जन के जीवन को सुखमय और शांतिमय बनाएं।

सम्पादकीय

महावीर जन्म कल्याणक

वैचारिक लोकतंत्र का महाकुंभ और अनेकांत का शाश्वत आलोक

- डॉ. अमितराय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस
Mob. 9837394448, 9997889995 E-mail : amitraijain78@gmail.com

'उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य युक्तं सत्'-तत्त्वार्थ सूत्र का यह गंभीर उद्घोष भगवान महावीर की उस प्रज्ञा का परिचायक है, जिसने सृष्टि के कण-कण में परिवर्तन और नित्यता के अंतर्संबंधों को व्याख्यायित किया। आज जब संपूर्ण विश्व भगवान महावीर स्वामी के 2625वें जन्म कल्याणक के शुभ अवसर पर भाव भक्ति के सरोवर में आकंठ डूबा है, तब मानवता के समक्ष सबसे बड़ा प्रश्न उत्सव की भव्यता का नहीं, बल्कि सिद्धांतों की प्रासंगिकता का है। कुंडलपुर के उस तेजस्वी राजकुमार ने राजसी वैभव का परित्याग केवल व्यक्तिगत मोक्ष के लिए नहीं, बल्कि उस समय की जड़ हो चुकी सामाजिक चेतना को 'अनेकांत' के अमृत से अभिसिंचित करने के लिए किया था। आज ढ़ाई सहस्त्राब्दी बीत जाने के बाद भी, महावीर का दर्शन आधुनिक समाज की व्याधियों के लिए एकमात्र अचूक औषधि प्रतीत होता है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ 'बौद्धिक आतंकवाद' और 'वैचारिक असहिष्णुता' ने मनुष्य के विवेक को बंधक बना लिया है, वहाँ महावीर का 'अनेकांतवाद' किसी दार्शनिक विलासिता का विषय नहीं, बल्कि अस्तित्व की रक्षा का अनिवार्य सिद्धांत है। विडंबना देखिए, हम उस युग के साक्षी हैं जहाँ सत्य को 'खंडों' में बाँटकर उसे पूर्ण सत्य सिद्ध करने की आत्मघाती होड़ मची है।

हरिशंकर परसाई की पैनी दृष्टि से उधार लेकर कहें तो, "आजकल सत्य की स्थिति उस फटे हुए कुर्ते जैसी हो गई है, जिसे हर विचारधारा अपने स्वार्थ की सिलाई से रफू करने की कोशिश कर रही है।" हम दूसरों के सत्य को स्वीकार करना तो दूर, उसे सुनने का धैर्य भी खो चुके हैं। ऐसे 'बौद्धिक अकाल' के समय में महावीर का अनेकांतवाद (शेष पृष्ठ 3 में)

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES Fashion for Family POLUR
varnalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR • TIRUVANAMALAI • VILLUPURAM
JAIN PETRO Reliance Petroleum Retail Outlet, Diversion Road, Polur 606-803
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमिताय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमिताय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री पारस मोदी जैन, मुंबई	98200 60530

राष्ट्रीय पर्यवेक्षण समिति

राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	98100 45440
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री महावीर रांका जैन, पोलुर	94442 04046
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर सिटी	98151 84811
श्री संजय जैन, दिल्ली	98111 67770
श्री डिपिन नेमनाथ जैन, इन्दौर	78699 99222
श्री विजयकांत कोठारी जैन, पुणे	98230 82152

राष्ट्रीय समन्वय समिति

श्री प्रशांत जैन, 'गांधरा' दिल्ली (मुख्य समन्वयक)	98101 21450
श्री सुरेशकुमार लुणावत जैन, चेन्नई (ज़ोन - 1)	98842 21003
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना (ज़ोन - 2)	98150 20661
श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा (ज़ोन - 3)	94141 13056
श्री ईश्वर बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर (ज़ोन - 4)	98237 99998
श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत (ज़ोन - 5)	98251 35744

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	98681 25710

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573
श्री पुखराज मेहता जैन, बैंगलोर	98446 77725
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री दिनेश कुमार भलगट जैन, चेन्नई	98402 64888
श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री विमलचंद जैन, अम्बाला	94667 01008
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	98106 72111
श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन, उदयपुर	95117 05291
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	94222 46500
श्री सतीश बाबूसेठ लोढ़ा जैन, अहमदनगर	94222 22138
श्री सुनील मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	94205 85878
श्री कीर्ति दुग्गड़ जैन, पुणे	98220 34344
श्री शंभुलाल ललवानी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

श्री एस. के. जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98102 78217

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
राष्ट्रीय मंत्री : श्री अशोककुमार धोका जैन, बैंगलोर	98440 58123

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री प्रकाश भटेवरा जैन, इन्दौर	98270 31032
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मनीष बाफना जैन, सूरत	93749 86671
राष्ट्रीय मंत्री : श्री जितेन्द्र चोपड़ा जैन, इन्दौर	93021 27805

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	94224 59362
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोशनलाल वड़ाला जैन 'सी.ए.', नवी मुंबई	98200 72121

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
चेयरमैन : श्री सुरेश जैन, दिल्ली	98112 39872
वाईस चेयरमैन : श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री सुरेशचंद जैन, दिल्ली	98117 48722
राष्ट्रीय मंत्री : श्री नरेन्द्र जैन, दिल्ली	98101 63165

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री शैलेष शोभाचंद संचेती जैन, वैजापुर	94214 18121

जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री शशिकांत 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोहित छाजेड़ जैन, औरंगाबाद	94207 64456

हर प्रांत जैन भवन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक कुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विनय कुमार नाहटा जैन, दिल्ली	98110 12512
राष्ट्रीय मंत्री : श्री प्रफुल्ल कोठारी जैन, पुणे	90110 17777

राष्ट्रीय जन कल्याण योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : सतिन्दर वीर जैन	98110 70722
राष्ट्रीय चेयरमैन : सुदर्शन जैन	93108 99904
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : संजय जैन	98187 25000
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : नंदीवर्धन जैन	98110 39625
राष्ट्रीय मंत्री : कनिका संदीप जैन	96549 73690

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	98226 59910
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मुकेश जैन 'सांड़', मोहाली	93185 93599

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय डिजिटाईजेशन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री सुभाष जैन 'लिली', गिदड़बाहा	98146 99393
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री राजीव सुनील सांखला जैन, बैंगलोर	98445 46014
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री संजय जैन 'चिली', दिल्ली	93501 32274
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री राकेश जैन, दिल्ली	98101 93101
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनधीर जैन, लुधियाना	98141 05020

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय मीडिया संचार योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय जैन, दिल्ली	93191 87434
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अजय जैन ' प्रथम', दिल्ली	97117 74004
राष्ट्रीय मंत्री : लक्ष्मीलाल वीरवाल जैन	94604 45060

राष्ट्रीय युवा शाखा

अध्यक्ष : श्री विपुल जैन, दिल्ली	87662 14456
चेयरमैन : श्री अंकुर जैन, दिल्ली	98711 98111
कार्याध्यक्ष : श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मंजीत शांतिलाल कोठारी जैन, सूरत	93745 44138
महामंत्री : श्री अमित कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	91522 11555
कोषाध्यक्ष : श्री मुनीष पकंज जैन, दिल्ली	99998 38345

राष्ट्रीय महिला शाखा

अध्यक्षा : श्रीमती संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
चेयरमैन : श्रीमती अनामिका कुलदीप तलेसरा, सूरत	94278 08401
वाईस चेयरमैन : श्रीमती मीनाक्षी विनय जैन, दिल्ली	98187 44166
वरिष्ठ उपाध्यक्षा : श्रीमती कुसुम महावीरप्रसाद जैन, सोनीपत	92515 74016
महामंत्री : श्रीमती रीचा संदीप जैन, लुधियाना	79737 96548
कोषाध्यक्षा : श्रीमती उर्मिल नरेश जैन, दिल्ली	92504 18306

प्रांतीय अध्यक्ष

श्री प्रकाश बुरड़ जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98456 71449
श्री विनोद कुमार कीमती जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98490 11350
श्री वी. धर्मीचन्द जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	94444 31536
श्री अनिल जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98141 40491
डॉ. श्री रामनिवास जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	92541 19621
श्री कीमतीलाल जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	97203 57112
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री आनंद चपलोत जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94609 66507
श्री हुलास बेताला जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	96696 97797
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मोहनलाल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	94222 50478
श्री नितिन बेदमुथा जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	93710 75787
श्री सम्पत खाविया जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98250 47321

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री सम्पतराज कोठारी जैन, सिकन्दराबाद	92461 58452
श्री सुरेश गादिया जैन, चेन्नई	98402 00916
श्री राजेन्द्र बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री अरूण कुमार जैन, लुधियाना	98155 66885
श्री रवीन्द्र जैन, पानीपत	98960 92861
श्री नितिन जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री नरेश जैन 'रिंढ़ाना', दिल्ली	98100 66701
श्री दिलीप रूणवाल जैन, दिल्ली	98112 05545
श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री नरेश लोढ़ा जैन, उदयपुर	93222 56788
डॉ. सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इन्दौर	99818 50900
श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन, इन्दौर	94250 62147
श्री मीठालाल कांकरिया जैन, औरंगाबाद	98226 71574
श्री वसंत लोढ़ा जैन, अहमदनगर	94212 05000
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुलिया	94231 93447
श्री कैलाश प्रकाश बाफना जैन, औरंगाबाद	93726 66999
श्री सुरेश सिंघवी जैन, मुंबई	98212 87789
श्री विलास राठौड़ जैन, पुणे	98901 74007
श्री आकाश मादरेचा जैन, सूरत	94287 45537

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

श्री दीपक जैन, दिल्ली	93508 70065
श्री संजय जैन 'निशा', लुधियाना	94172 53101
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन, पुणे	93710 89896
श्री संदीप जैन 'सन्नी', जम्मू	94191 90527
श्री महेन्द्र जैन, सवाई माधोपुर	94626 72015

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

श्री जयप्रकाश ललवानी जैन, चेन्नई	99412 45660
श्री संजीव जैन 'आनंदमु', दिल्ली	93122 40901
श्री नितिन चोपड़ा जैन, पुणे	98224 07446
श्री प्रकाश कोठारी जैन, खार, मुंबई	98200 83919
श्री त्रिलोक जैन, दिल्ली	98681 06607

प्रांतीय महामंत्री

श्री नेमीचंद दलाल जैन (कर्नाटक)	99649 72251
श्री किशोर कुमार मुथा जैन (तेलंगाना)	92473 99003
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री संजय जैन (हरियाणा)	98130 50937
श्री अनुराग जैन (उत्तर प्रदेश)	98371 09567
श्री ललित ओसवाल जैन (दिल्ली)	98111 38968
श्री लोकेश धाकड़ जैन (राजस्थान)	98280 50143
श्री पीयूष जैन (मध्य प्रदेश)	94254 00121
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री शांतिलाल इंदरचंद दुग्गड़ जैन (महाराष्ट्र)	98220 79225
श्री गणेश ओसवाल जैन (मुंबई-पुणे)	99218 79613
श्री विनोद कुमार धोका जैन (गुजरात)	94279 30764

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार समिति

एडवोकेट श्री नरेश कुमार जैन, रानियां	90504 00009
एडवोकेट श्री सुनील जैन, चण्डीगढ़	98141 90422
एडवोकेट श्री नवीन जैन, पानीपत	90347 19097

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार समिति

सदस्य : श्री संजय तारांचद कोटेचा जैन, जलगांव	99237 11711
सदस्य : श्री संजय बोहरा जैन, मुंबई	98339 57170
सदस्य : श्री अतुल चोरड़िया जैन, वाघोली, पुणे	80876 35657
सदस्य : श्री रवि जैन, दिल्ली	99996 10010
सदस्य : श्री रमेश कुमार जैन, 'शास्त्री' जीन्द	92554 30824

वरिष्ठ मार्गदर्शक

श्री प्रेमचंद जैन, गुरुग्राम (हरियाणा)	92113 08367
श्री जसवंत दलाल जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)	98863 88021
श्री शांतिलाल पोखरणा, बैंगलोर (कर्नाटक)	98451 55799
श्री महावीरचंद भण्डारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	98401 96758
श्री विमल धारीवाल जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94433 32330
श्री पदमचंद बागमार जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94440 77990
श्री अरिदमन जैन, लुधियाना (पंजाब)	95012 33866
श्री जतिन्द्र जैन, लुधियाना (पंजाब)	98559 39174
श्री विश्वा जैन, लुधियाना (पंजाब)	98140 88391
श्री राजेश जैन, लुधियाना (पंजाब)	98761 71831
श्री अजय जैन, पानीपत (हरियाणा)	94161 22219
श्री जगदीशचन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	98962 00081
श्री जगदीश जैन, रोहतक (हरियाणा)	93556 71998
श्री राजिन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	99963 33388
श्री राजीव जैन, पानीपत (हरियाणा)	98122 00002
श्री राहुल जैन, करनाल (हरियाणा)	99927 33822
श्री संदीप जैन, सिरसा (हरियाणा)	92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुज़फ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)	98370 67082
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)	98100 78214
श्री पारस जैन, मेरठ (उत्तर प्रदेश)	99270 62009
श्री जयप्रकाश जैन, बड़ौत (उत्तर प्रदेश)	99974 55741
श्री अनिल जैन 'बखेता', रोहिणी, दिल्ली	93124 33320
श्री राजकुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98112 52316
श्री विजय जैन, रोहिणी, दिल्ली	99994 73873
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98371 74345
श्री देवेन्द्र जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99716 65599
श्री सत्यनारायण जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	92158 99904
श्री प्रदीप जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99999 97513
श्री रोशनलाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98100 50467
श्री सतपाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98102 64999
श्री अशोक जैन 'जयचंदा' ऋषभ विहार, दिल्ली	93109 89999
श्री भूपेन्द्र जैन, अशोक विहार, दिल्ली	98110 16545
श्री लवकुमार जैन, वीरनगर, दिल्ली	88266 72626
श्री नरेश जैन, पंजाबी बाग, दिल्ली	98111 30285
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, शक्तिनगर, दिल्ली	98100 21710
श्री राजकुमार जैन, शास्त्रीनगर, दिल्ली	98114 04140
श्री मदनलाल जैन 'शामडी', प्रशांत विहार, दिल्ली	98737 76896
श्री पंकज जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	88600 98595
श्री संजय जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98187 25000
श्री चक्रेश जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98112 33462
श्री बजरंगलाल जैन, दिल्ली	93122 62192
श्री अशोक पालरेचा जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94601 71190
श्री ज्ञानचंद विनायकिया जैन, ब्यावर (राजस्थान)	98140 10385
श्री महावीर कुमार बाफना जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94147 38976
श्री गौतम संचेती जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94142 58370
श्री मांगीलाल लोढ़ा जैन, उदयपुर (राजस्थान)	88753 26779
श्री शंकरलाल डांगी जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94628 83336
श्री दिनेशचन्द्र चोरड़िया जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94141 66639
श्री सिद्धराज सिंघवी जैन, निम्बाहेड़ा (राजस्थान)	98298 86701
श्री भूपेन्द्र सिंह पगारिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94146 17494
श्री पकंज कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 11902
श्री मीठालाल सिंघवी जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 12134
श्री दीपक कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	98293 47007
श्री राजेन्द्र गोखरू जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 84005
श्री मनमोहन गांधी जैन, पाली (राजस्थान)	94143 26293
श्री अम्बालाल लोढ़ा जैन, राजसमन्द (राजस्थान)	98290 40800
श्री अभय पोखरणा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98930 33345
श्री अचल चौधरी जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98260 20161
श्री अनिल बरड़िया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	93021 22995
श्री हेमंत बोहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94074 13922
श्री राजकुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94253 19691
श्री सुरेश देशलहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98270 31960
श्री सुभाष विनायकिया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	96302 55540
श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया जैन, उज्जैन (मध्य प्रदेश)	73662 31275
श्री इन्द्रमल पटवा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 28737
श्री महेन्द्र बोथरा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98270 06500
श्री सुजानमल कोटेचा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 08682
श्री रवि सुराणा जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94251 01014
श्री यशवंत सिंह बाफना जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94254 87623
श्री शांतिलाल चोरड़िया जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	98909 52621
श्री संतोष मंडलेचा जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	99234 78889
श्री शोभाचंद संचेती जैन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)	94051 07851
श्री हसमुख बंबकी जैन, रत्नागिरी (महाराष्ट्र)	94224 29611
श्री जीवनराज पुनमिलया जैन, इचलकरंजी (महाराष्ट्र)	92258 31765
श्री हीरालाल पगारिया जैन, अहमदनगर (महाराष्ट्र)	
श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98201 11839
श्री महावीरचंद तातेड़, मुंबई (महाराष्ट्र)	98699 09374
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	
श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98212 20220
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	87882 35525
श्री पोपटलाल ओस्तवाल जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	98230 81825
श्री सुभाष सुराणा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	97662 90002
श्री ओमप्रकाश मांडोत जैन, अंकलेशवर (गुजरात)	99250 20407
श्री प्यारचंद कोठारी जैन, सूरत (गुजरात)	93745 35686
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री विनोद कुमार सूर्या जैन, खेड़ब्रह्मा (गुजरात)	93277 57610
श्री हीरालाल खाविया जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	94270 31776
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री जयंतिलाल कोठारी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	

वर्ष 2026 में श्री जैन स्थानक जैन भवन में पधारने वाले पूज्य साधु-साध्वीवृंद

- पू. साध्वी श्री यशा जी म.सा. आदि ठाणा 3
- पू. साध्वी श्री विजयता जी म.सा. आदि ठाणा 3
- पू. साध्वी श्री रजनी जी म.सा. आदि ठाणा 2
- पू. साध्वी श्री विजयता जी म.सा. आदि ठाणा 3
- पू. श्री रमेशमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4
- पू. साध्वी श्री यशाज्योति जी म.सा. आदि ठाणा 3
- पू. साध्वी श्री शैली जी म.सा. आदि ठाणा 6
- पू. साध्वी श्री सुमंगलाजी म.सा. आदि ठाणा 7
- पू. साध्वी श्री संयमप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5
- पू. साध्वी श्री शैली जी म.सा. आदि ठाणा 6
- पू. साध्वी श्री श्रेया जी म.सा. आदि ठाणा 2
- पू. श्री राजेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4
- पू. साध्वी श्री मनीषा जी म.सा. आदि ठाणा 7
- पू. श्री उपेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5
- पू. साध्वी श्री रजनी जी म.सा. आदि ठाणा 2

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

ईंधन संकट से देश को बचाएं - हर नागरिक की जिम्मेदारी!

- डॉ. अवनीश जैन

दोस्तों, खाड़ी में बढ़ते तनाव के कारण गैस और ईंधन की किल्लत हो सकती है। अभी से सतर्क हो जाएं - ये स्मार्ट कदम देश को संकट से बचाएंगे, जो कुछ भी कर सकते हैं करें।

रसोई में स्मार्ट बचत : इंडक्शन कुकटॉप पर अधिक पकाएं - सिलेंडर लंबे समय तक चलेगा, प्रेशर कुकर हमेशा इस्तेमाल करें - 30% गैस बचती है, एक बार में अधिक खाना बनाएं, बार-बार चूल्हा न जलाएं, ढ़क्कन लगाकर पकाएं - 25% तेज पकेगा, गैस कम जलेगी, बार-बार चीजें गर्म ना करें - गैस बर्बाद न करें, गाड़ी - स्मार्ट तरीके से चलाएं, टैंक हमेशा फुल रखें - संकट में लाइन में खड़े न होना पड़े, गाड़ी सिर्फ बहुत जरूरी काम पर निकालें - सोचें "क्या यह काम फोन पर नहीं हो सकता?", एक ट्रिप में सारे काम निपटाएं - बैंक, बाजार, डॉक्टर एक ही बार में, जो काम टू व्हीलर से हो सकते हैं उनके लिए फोर व्हिलर न निकालें, कारफुल ग्रुप बनाएं - WhatsApp पर मोहल्ले का ग्रुप बनाएं, टैक्सी शेयर करें - 4 लोग मिलें, किराया बांटें, टायर में सही हवा रखें - 10% ईंधन अपने आप बचेगा, डिजिटल अपनाएं - ईंधन बचाएं, बिल, फॉर्म, आवेदन - ज्यादा से ज्यादा ऑनलाइन करें, ऑनलाइन शॉपिंग करें - खुद जाने की बजाय घर मंगाएं, Video Call से मीटिंग करें - ऑफिस हर दिन जाना यदि जरूरी नहीं हो, बच्चों की फीस, फॉर्म आदि - सब ऑनलाइन सबमिट करें, UPI से भुगतान करें ATM जाने की जरूरत नहीं।

बिजली की चालाक बचत : AC 24°C पर सेट करें - 1°C बढ़ाने से 6% बिजली बचती है, रात को सीलिंग फैन और हल्की चादर - AC की जरूरत नहीं, दिन में प्राकृतिक रोशनी इस्तेमाल करें, बत्ती बंद रखें, गीजर बंद रखें, थर्मस में गर्म पानी स्टोर करें, बिना काम सभी प्लग सॉकेट से निकाल दें।

मोहल्ले और समाज स्तर पर : पड़ोसी के साथ मिलकर सब्जी लाएं - एक गाड़ी, सब का काम, बच्चों को साइकिल से स्कूल भेजें - स्वास्थ्य भी, बचत भी, स्थानीय दुकान से खरीदें - दूर मॉल जाना कम करें।

सबसे क्रिएटिव आइडिया : "No Fuel Friday" - हर शुक्रवार गाड़ी घर पर रखें, "एक काम - एक ट्रिप" चैलेंज परिवार में शुरू करें, घर की छत पर सोलर पैनल - बिजली का बिल और ईंधन दोनों बचेगा, ऑफिस में WFH की मांग करें यदि संभव हो - देशहित में कंपनी मानेगी।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय')

हमें यह बोध कराता है कि सत्य एकांगी नहीं होता। वह 'अनंतधर्मा' है, जिसके अगणित पहलू हैं और हर पहलू अपनी जगह सत्य है।

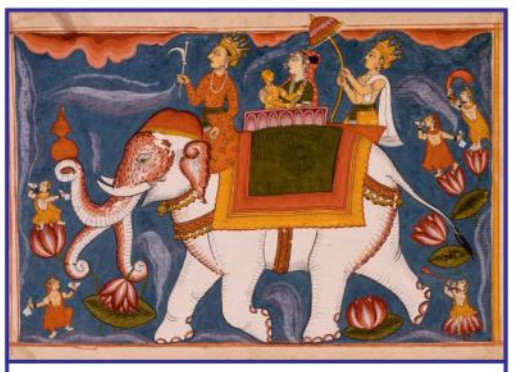

तीर्थंकर जन्म उपरांत तीर्थंकर माता ऐरावत हाथी पर जन्म कल्याणक स्नान के लिए पदार्पण करते हुए। एक प्राचीन पांडुलिपि चित्र
स्रोत-शहजाद राय शोध संस्थान, बड़ौत

अनेकांतवाद केवल एक धार्मिक विचार नहीं, बल्कि 'बौद्धिक अहिंसा' का क्रियात्मक रूप है। शारीरिक अहिंसा तो केवल स्थूल रूप है, वास्तविक अहिंसा तो विचारों के स्तर पर 'पर' (दूसरे) के अस्तित्व और उसके मत को सम्मान देने में निहित है। आज के ध्रुवीकृत समाज में, जहाँ धर्म, जाति और राजनीति के नाम पर दीवारें ऊँची की जा रही हैं, वहाँ अनेकांतवाद उन दीवारों के बीच 'संवाद के सेतु' निर्मित करने का कार्य करता है। यह हमें सिखाता है कि सत्य का पूर्ण साक्षात्कार केवल उसी को हो सकता है जिसके पास संकीर्णता का चश्मा न हो।

यदि हम भगवान महावीर के 2625वें जन्म कल्याणक के इस ऐतिहासिक अवसर पर उनके अनेकांतवाद सिद्धांत को अपने दैनिक व्यवहार, राजनीति और सामाजिक विमर्श में उतार सकें, तो यह इस युग की सबसे बड़ी क्रांति होगी। अनेकांतवाद हमें सिखाता है कि कट्टरता मानसिक दरिद्रता का लक्षण है, जबकि उदारता आत्मिक संपन्नता का।

आज इस संकल्प को पुनः दोहराना है कि हम महावीर के सिद्धांतों को केवल शास्त्रों की शोभा नहीं, बल्कि लोक-जीवन का आधार बनाएंगे। राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि जब तक समाज में 'अनेकांत' की दृष्टि जीवंत है, तब तक मानवता को कोई पराजित नहीं कर सकता। आइए, इस महापुरुष के जन्म कल्याणक पर हम अपने भीतर के 'अंधकार' और 'एकांत' (हठधर्मिता) का विसर्जन करें और एक ऐसे समाज का निर्माण करें जो तर्कों से नहीं, बल्कि संवेदनाओं और सह-अस्तित्व की भावना से संचालित हो।

भगवान महावीर का शासन कालजयी है, क्योंकि वह सत्य की किसी एक व्याख्या का नहीं, बल्कि सत्य की अनंत संभावनाओं का उत्सव है। भगवान महावीर स्वामी के पावन जन्म कल्याणक की सभी पाठकों एवं चतुर्विध संघ को हार्दिक बधाई।

जैन समाज की घटती जनसंख्या : आत्मचिंतन का समय

- सुगालचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

समय-समय पर समाज को आईना दिखाने वाली कुछ बातें हमारे सामने आती हैं जो हमें असहज भी करती हैं और सोचने पर मजबूर भी करती हैं। आज जैन समाज के सामने ऐसा ही एक गंभीर प्रश्न खड़ा है-हमारी घटती जनसंख्या का प्रश्न। यह केवल भावनात्मक विषय नहीं है, बल्कि एक सच्चाई है जिसे हम अपने आस-पास देख भी रहे हैं और महसूस भी कर रहे हैं। यदि एक साधारण गणना करें तो तस्वीर और स्पष्ट हो जाती है। यदि बच्चे लगभग 20 वर्ष की आयु में विवाह करते हैं तो एक शताब्दी में लगभग पाँच पीढ़ियाँ तैयार हो जाती हैं। यदि विवाह की आयु 25 वर्ष हो जाए तो एक शताब्दी में केवल चार पीढ़ियाँ बनती हैं और यदि विवाह की आयु 33 वर्ष के आस-पास पहुँच जाए तो पूरे सौ वर्षों में केवल तीन पीढ़ियाँ ही बन पाती हैं। यह गणित हमें स्पष्ट संकेत देता है कि विवाह की बढ़ती आयु और कम होती संतान संख्या समाज की जनसंख्या को किस दिशा में ले जा रही है।

आज अनेक स्थानों पर यह स्थिति देखने को मिल रही है कि गाँवों में जैन परिवार कम होते जा रहे हैं। कई पुराने घर बंद पड़े हैं। शहरों में ऊँची इमारतें तो खड़ी हो गई हैं लेकिन संयुक्त परिवारों की रौनक धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। घरों में बच्चों की चहल-पहल की जगह अब एक अजीब सा मौन फैलता जा रहा है।

एक और चिंता का विषय यह है कि विवाह की आयु लगातार बढ़ रही है। कई युवतियाँ 30 से 35 वर्ष की आयु तक विवाह नहीं कर रही हैं और अनेक युवक भी 35 वर्ष के बाद तक अविवाहित रह जाते हैं। जब विवाह बहुत देर से होते हैं तो स्वाभाविक रूप से परिवार छोटा रह जाता है और अधिकतर दंपति केवल एक ही संतान पर रुक जाते हैं। इसके साथ-साथ तलाक की घटनाएँ भी धीरे-धीरे बढ़ रही हैं, जिससे परिवारों का संतुलन और अधिक कमजोर हो रहा है।

यदि हम केवल एक सरल उदाहरण लें तो स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। मान लीजिए किसी समाज में 100 लोग हैं, अर्थात लगभग 50 दंपति। यदि हर दंपति केवल एक ही बच्चा पैदा करें तो अगली पीढ़ी में जनसंख्या लगभग आधी रह जाएगी। यदि यही क्रम आगे भी चलता रहा तो कुछ ही पीढ़ियों में समाज की संख्या अत्यंत सीमित हो जाएगी। यह कोई कल्पना नहीं है, बल्कि सीधा और स्पष्ट गणित है।

आज अनेक परिवारों में यह सोच विकसित हो गई है कि एक ही बच्चा पर्याप्त है। उसके पीछे कई तर्क दिए जाते हैं-जीवन का आनंद लेना है, कैरियर पर असर नहीं होना चाहिए, जीवनशैली प्रभावित नहीं होनी चाहिए या समाज हमें आधुनिक समझें। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या केवल सुविधा और व्यक्तिगत जीवनशैली के आधार पर हम अपने समाज के भविष्य को नजरअंदाज कर सकते हैं। धीरे-धीरे बच्चों का जन्म प्रेम और परिवार की स्वाभाविक प्रक्रिया के बजाय सामाजिक प्रदर्शन का विषय बनता जा रहा है। मानो केवल यह दिखाने के लिए कि हमारे पास भी एक बच्चा है। यह सोच न केवल समाज के लिए चिंताजनक है बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी असुरक्षित भविष्य का संकेत देती है। (क्रमशः)

जैन समाज में बढ़ते अंतर जातीय विवाह-आत्मचिंतन की आवश्यकता

एक विचारणीय विषय आजकल बहुत ही ज्यादा प्रासंगिक है। पिछले कुछ वर्षों में हम सभी यह देख रहे हैं कि हमारे समाज के वे परिवार, जो आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से अत्यंत प्रतिष्ठित माने जाते हैं-उनके पुत्र एवं पुत्रियाँ बड़ी संख्या में अंतर जातीय विवाह की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

यह केवल एक सामाजिक परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह हमारे संस्कारों, परंपराओं और धार्मिक आधारों पर भी एक गहन प्रश्नचिह्न खड़ा करता है। हम सभी स्वयं से यह प्रश्न अवश्य पूछें-क्या यह केवल आधुनिकता का प्रभाव है? क्या यह हमारी संतानों के संस्कारों में आई कमी का परिणाम है? या फिर यह हमारे अपने आचरण, पालन-पोषण और धार्मिक अभ्यास में आई शिथिलता का दर्पण है? जैन दर्शन के अनुसार प्रत्येक घटना के पीछे कर्मों का बंध और उनका उदय कारण होता है। यदि हमारी नई पीढ़ी अपने मूल धर्म, परंपरा और मर्यादाओं से विमुख हो रही है, तो हमें यह सोचने की आवश्यकता है कि कहीं यह हमारे ही द्वारा किए गए किसी चूक, किसी प्रमाद या धर्म के प्रति उपेक्षा का परिणाम तो नहीं है।

हम अपने बच्चों को उच्च शिक्षा, आधुनिक जीवनशैली और भौतिक सुविधाएं तो दे रहे हैं, परंतु क्या हम उन्हें जैन धर्म के मूल सिद्धांत-अहिंसा, संयम, आत्म संयम और संस्कार भी उतनी ही दृढ़ता से दे पा रहे हैं? सिर्फ स्थानक-धर्मस्थान में जाना या धार्मिक आयोजन करना पर्याप्त नहीं है, जब तक कि हमारे घरों में धर्म का व्यवहारिक रूप से पालन न हो। यदि माता-पिता स्वयं धर्म के प्रति जागरूक नहीं होंगे, तो बच्चों से अपेक्षा करना व्यर्थ है। यह समय किसी पर आरोप लगाने का नहीं, बल्कि आत्मचिंतन का है। आइए, हम सब मिलकर कुछ संकल्प लें-अपने बच्चों को प्रारंभ से ही जैन संस्कारों से जोड़ें, घर में धार्मिक वातावरण का निर्माण करें, समाज स्तर पर ऐसे कार्यक्रम चलाएं जो युवाओं को धर्म से जोड़ें, विवाह जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों में संवाद और मार्गदर्शन को प्राथमिकता दें, यदि हम आज नहीं जागे, तो आने वाली पीढ़ियाँ केवल नाममात्र की जैन रह जाएंगी। अतः आप सभी से विनम्र निवेदन है कि इस विषय पर गंभीरता से विचार करें और अपने परिवार तथा समाज के भविष्य को सुरक्षित करने हेतु एकजुट होकर प्रयास करें।

ALDACO
AIM HIGH

Sudershan Jain
National Chairman – Jan Kalyan Yojana
Jain Conference, New Delhi

DEALS IN NON LEATHER FOOTWEAR
ALDACO FOOTWEAR
9310899901 | Aldacofootwear@gmail.com

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 11

कर्ता भाव - 'मैं कर रहा हूँ' (गहन विस्तार)

अहंकार की सबसे स्पष्ट और सक्रिय अभिव्यक्ति है-कर्ता भाव। यह वह सूक्ष्म धारा है जो भीतर लगातार कहती रहती है-"मैं कर रहा हूँ।", "मेरे कारण हो रहा है।", "यदि मैं न करूँ तो कुछ नहीं होगा।", प्रथम दृष्टि में कर्ता भाव स्वाभाविक लगता है। जीवन में कर्म करना आवश्यक है। जिम्मेदारी निभाना भी आवश्यक है। परंतु जब "कर्म" पहचान बन जाए, जब "कर्तापन" अस्तित्व का केंद्र बन जाए, तभी प्रमाद जन्म लेता है।

1. कर्ता भाव का जन्म बचपन से हमें सिखाया जाता है-तुम्हें आगे बढ़ना है। तुम्हें सफल होना है। तुम्हें कुछ बनना है। धीरे-धीरे "करना" ही "होना" बन जाता है। व्यक्ति अपने कार्यों से स्वयं को परिभाषित करने लगता है। उसकी पहचान उसके परिणामों से जुड़ जाती है। यहीं से कर्ता भाव की जड़ पड़ती है।

2. कर्ता भाव और जिम्मेदारी कर्ताभाव का एक स्वस्थ रूप भी है। जब व्यक्ति अपने दायित्व निभाता है, समर्पण से कार्य करता है, तो वह सजग कर्म है। परंतु जब जिम्मेदारी बोझ बन जाए-जब व्यक्ति हर चीज स्वयं पर ले ले-जब वह दूसरों को भी नियंत्रित करने लगे-तो कर्ता भाव कठोर हो जाता है। यह कठोरता भीतर तनाव उत्पन्न करती है।

3. परिणाम से चिपकाव कर्ताभाव का दूसरा चरण है-परिणाम से जुड़ाव। "यदि यह सफल हुआ तो मैं योग्य हूँ।", "यदि असफल हुआ तो मैं असफल हूँ।", यहाँ व्यक्ति स्वयं को परिणाम से बाँध देता है। परिणाम अनिश्चित है। परंतु आत्म-मूल्य उससे जुड़ जाता है। यही बंधन प्रमाद की शुरुआत है।

4. कर्ता भाव और नियंत्रण यदि मैं कर्ता हूँ, तो मुझे नियंत्रण भी रखना होगा। यह विचार धीरे-धीरे नियंता भाव में बदल जाता है। व्यक्ति हर परिस्थिति को अपने अनुसार मोड़ना चाहता है। जब परिस्थिति वैसी नहीं होती, तो भीतर अशांति उठती है। यह अशांति संकेत है कि कर्ताभाव सक्रिय है।

5. कर्ता भाव का शारीरिक प्रभाव कर्ताभाव केवल मानसिक नहीं है। छाती में जकड़न आती है-क्योंकि व्यक्ति सब संभालना चाहता है। नाभि में तनाव आता है-क्योंकि अस्तित्व पर भरोसा कम है। श्वास उथली हो जाती है-क्योंकि भीतर दबाव है। कर्ताभाव शरीर में कठोरता बनकर उतरता है।

6. आध्यात्मिक कर्ताभाव यहाँ तक कि आध्यात्मिक जीवन में भी कर्ताभाव प्रवेश कर सकता है। "मैं साधना कर रहा हूँ।" "मैं प्रगति कर रहा हूँ।", "मैंने अनुभव प्राप्त किया।", यह सूक्ष्म कर्ताभाव है। यह व्यक्ति को लगता है कि वह आगे बढ़ रहा है। पर भीतर अहंकार मजबूत हो रहा होता है।

7. कर्ता से माध्यम तक क्या कर्ताभाव को त्याग देना चाहिए? कर्म आवश्यक है। परंतु दृष्टि बदल सकती है। "मैं कर रहा हूँ", से "मुझसे हो रहा है" की ओर। जब व्यक्ति स्वयं को माध्यम अनुभव करता है, तो कार्य चलता रहता है-पर बोझ कम हो जाता है।

8. कर्ताभाव की पहचान जब भीतर यह वाक्य उठे- "मेरे बिना संभव नहीं।", "मुझे ही सब संभालना है।", "यदि मैंने छोड़ा तो सब बिगड़ जाएगा।", तो रुकें। श्वास लें। नाभि को महसूस करें। देखें-क्या यह वास्तविकता है? या कर्ताभाव की आवाज?

9. नम्रता का जन्म कर्ताभाव ढीला तब पड़ता है जब व्यक्ति अनुभव करता है-बहुत कुछ उसके नियंत्रण से बाहर है। बहुत कुछ स्वतः घट रहा है। यह अनुभव नम्रता लाता है। नम्रता कमजोरी नहीं है। वह सजगता की परिपक्व अवस्था है।

10. अंतिम स्पष्टता कर्ता भाव कर्म की आवश्यकता है, पर पहचान नहीं। जब कर्म पहचान बन जाता है, तो प्रमाद जन्म लेता है। जब कर्म साक्षी में घटता है, तो प्रमोद जन्म लेता है। अगले अध्याय में हम कर्ताभाव के विभिन्न प्रकारों को समझेंगे-ताकि उसकी सूक्ष्म परतें भी स्पष्ट हो सकें।

❀❀❀

(क्रमशः अगले अंक में)

अंदर की पीड़ा को पहचानना भी समाज का धर्म है

- सुरेश कोठारी जैन

दुर्ग (छत्तीसगढ़) में हाल ही में घटी एक अत्यंत दुःखद घटना ने पूरे जैन जैन समाज को झकझोर कर रख दिया। अरुण कुमार जी टाटिया और उनके पुत्र पंकज जी टाटिया ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली, जानकारी के अनुसार इसके पीछे शारीरिक अस्वस्थता, अकेलापन, अवसाद और गंभीर आर्थिक कठिनाइयाँ जैसे कारण हैं।

यह घटना केवल एक परिवार की व्यक्तिगत त्रासदी नहीं है, बल्कि यह पूरे समाज के लिए एक गहरा प्रश्न भी खड़ा करती है क्या हम अपने आस-पास के लोगों की वास्तविक स्थिति को समझ पा रहे हैं? जैन समाज को सामान्यतः देश के सबसे समृद्ध और संगठित समाजों में गिना जाता है। भव्य धार्मिक आयोजन, विशाल चातुर्मास और सामाजिक कार्यक्रम इन सबके कारण यह समाज बाहरी दृष्टि से अत्यंत संपन्न और सशक्त दिखाई देता है। लेकिन हर समाज की तरह इस समाज के भीतर भी कुछ ऐसी सच्चाइयाँ छिपी हैं जो मंचों और आयोजनों की चमक में दिखाई नहीं देतीं। समाज के भीतर ही कई परिवार ऐसे हो सकते हैं जो आर्थिक कठिनाइयों से जूझ रहे हैं, कुछ लोग बीमारी, अकेलेपन और मानसिक तनाव से गुजर रहे होते हैं।

सबसे बड़ी समस्या यह है कि ऐसे लोग अक्सर अपनी परेशानी खुलकर व्यक्त नहीं कर पाते। स्वाभिमान, संकोच और सामाजिक प्रतिष्ठा की भावना उन्हें अपनी पीड़ा छिपाने के लिए मजबूर कर देती है। बाहर से सब सामान्य दिखाई देता है, लेकिन भीतर एक व्यक्ति धीरे-धीरे टूटता चला जाता है और वह समाज तक नहीं पहुँच पाता, समाज को एक ऐसी व्यवस्था विकसित करनी चाहिए कि समाज उन तक पहुँच चुके।

समाज को यह प्रयास करना चाहिए कि वह ऐसे लोगों की पहचान करें, जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं, जो बीमारी या अकेलेपन से जूझ रहे हैं, या जो मानसिक तनाव में जी रहे हैं यदि समय रहते उन्हें सहारा मिल जाए चाहे वह आर्थिक सहायता हो, भावनात्मक समर्थन हो या केवल आत्मीय संवाद तो कई जीवन बचाए जा सकते हैं।

यह भी एक विचारणीय विषय है कि जैन समाज धार्मिक कार्यों और आयोजनों में बड़ी मात्रा में धन खर्च करता है। चातुर्मास, धार्मिक आयोजन ये सब हमारी आस्था और परंपरा का हिस्सा हैं और उनका महत्व भी है। लेकिन यदि इन आयोजनों में थोड़ी सादगी अपनाकर कुछ संसाधनों को समाजोपयोगी प्रकल्पों में लगाया जाए जैसे अस्पताल, विद्यालय, सहायता कोष या सामूहिक आवास तो समाज के कई जरूरतमंद लोगों के जीवन में वास्तविक परिवर्तन लाया जा सकता है।

किसी भी समाज की वास्तविक शक्ति उसके भव्य आयोजनों से नहीं, बल्कि इस बात से मापी जाती है कि वह अपने कमजोर और संकटग्रस्त सदस्यों के साथ कितना संवेदनशील व्यवहार करता है। दुर्ग की यह दुःखद घटना हमें एक अवसर देती है रुककर सोचने का, आत्ममंथन करने का और यह समझने का कि समाज की समृद्धि का वास्तविक अर्थ क्या है।

यदि हम अपने आस-पास के लोगों के दर्द को पहचान सकें, समय रहते सहायता का हाथ बढ़ा सकें और अपने समाज को केवल संपन्न ही नहीं बल्कि संवेदनशील भी बना सकें तो शायद भविष्य में किसी परिवार को ऐसी त्रासदी का सामना न करना पड़े। समाज तभी सचमुच मजबूत होता है जब उसके सबसे कमजोर सदस्य भी सुरक्षित और सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें अंततः किसी भी समाज की सच्ची पहचान उसके मंदिरों की ऊँचाई से नहीं, बल्कि उसके दिलों की गहराई से होती है।

दक्षिण भारत में धार्मिक संघर्ष : क्या यह जैन-हिन्दू संघर्ष था ?

- महावीर सांगलीकर

प्राचीन भारत में जैन, बौद्ध, वैदिक, शैव, वैष्णव और कई अन्य धर्म-संप्रदाय समय-समय पर एक-दूसरे के विरोध में खड़े हुए थे। इस विरोध के पीछे आपसी प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या व अपने मत का आग्रह आदि कई कारण थे। कई बार यह विरोध बड़े संघर्ष का रूप लेता था। जब हम इसकी टाईम लाइन देखते हैं, तो दिखाई देता है कि प्राचीन काल में यह संघर्ष वैदिक, जैन और बौद्धों में होता रहता था। उस समय इनके अलावा और भी कई छोटे-मोटे मत-सम्प्रदाय थे, जो इस संघर्ष में नष्ट हो गए। यह संघर्ष आगे भी चलता रहा।

दक्षिण भारत में धार्मिक संघर्ष : ईसा की 5वीं सदी के बाद शैव और वैष्णव इन दोनों सम्प्रदायों ने जोर पकड़ लिया। राजाश्रय होने के कारण यह दोनों सम्प्रदाय फलते-फूलते गए, लेकिन बाद में इन दोनों सम्प्रदायों पर कट्टरता इतनी हावी हो गयी कि यह एक-दूसरे के विरोध में खड़े हो गए। इसका भयानक रूप ज्यादातर दक्षिण भारत में दिखाई दिया। दंगे और सांप्रदायिक लड़ाइयाँ तक होने लगी। दक्षिण भारत में शैव और वैष्णवों में संघर्ष तो था ही, लेकिन साथ ही वैष्णवों का जैनियों और बौद्धों से, शैवों का जैनियों और बौद्धों से, जैनियों का शैवों, वैष्णवों और बौद्धों से और बौद्धों का शैवों, वैष्णवों और जैनियों से संघर्ष होता रहता था। इस संघर्ष में दक्षिण भारत से बौद्ध धर्म लगभग नष्ट हो गया। जैन धर्म को भी बड़ी हानि पहुँची, लेकिन यह धर्म अपने अस्तित्व को बनाये रखने में कामयाब रहा। इतना ही नहीं, संघर्ष के बावजूद भी कर्नाटक और दक्षिण महाराष्ट्र में जैन धर्म फलता-फूलता रहा।

क्या यह जैन-हिन्दू संघर्ष था? अब सवाल यह है कि क्या जैन-शैव या जैन-वैष्णव संघर्ष जैन और हिन्दुओं के बीच का संघर्ष था? अगर आप मानते हैं कि यह संघर्ष जैन और हिन्दुओं के बीच था, तो शैव-वैष्णव संघर्ष के बारे में आप क्या कहेंगे? वास्तविकता यह है कि उस समय हिंदू नाम का कोई धर्म नहीं था और हिंदू इस शब्द का प्रयोग किसी भी धर्म के लिए प्रचलित नहीं हुआ था। इसलिए जैन-शैव या जैन-वैष्णव संघर्ष को जैन और हिन्दुओं के बीच का संघर्ष कहना एक बड़ी गलती है। यह गलती कई जैन-अजैन विद्वान करते हैं। उधर बौद्ध विद्वानों ने भी शैव-बौद्ध और वैष्णव-बौद्ध संघर्ष को बौद्ध-हिन्दू संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया है।

हमें इस बात को भी ध्यान रखना चाहिए कि उस काल में किसी भी व्यक्ति का जैन से शैव या वैष्णव होना, शैव से जैन या वैष्णव होना, वैष्णव से शैव या जैन होना एक आम बात थी। एक ही घर में एक भाई शैव, एक भाई जैन, एक भाई वैष्णव होता था। पति शैव पत्नी जैन, या पति जैन पत्नी वैष्णव जैसी बातें भी आम होती थी। इसके कई उदाहरण तत्कालीन साहित्य और शिलालेखों में दिखाई देते है। इतिहास साक्षी है कि कई राजवंशों में शैव और जैन इन दोनों धर्मों का पालन किया जाता था। मतलब यह हो गया कि समाज के तौर पर जैन-शैव-वैष्णव एक ही थे।

जैन-हिन्दू संघर्ष : वास्तविकता पर ध्यान दें - आज की वास्तविकता भी यह है कि आज भी समाज के तौर पर जैन-वैष्णव-शैव एक ही है। मैं इसके कुछ बड़े उदाहरण देना चाहूँगा। गुजरात प्रदेश में जैन और वैष्णवों में विवाह होना एक आम बात है। अग्रवाल समाज यह उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध जाति है। इस समाज के कुछ परिवार वैष्णव होते है और कुछ जैन। इस समाज में भी जैन-वैष्णव विवाह एक आम बात है। पूरे भारत में, विशेषकर पश्चिम और दक्षिण भारत में कई ऐसी जातियाँ हैं जिनमें से ज्यादातर लोग शैव या वैष्णव होते हैं, लेकिन ऐसी जाति का एक छोटा समूह जैन धर्मावलम्बी होता है। दूसरी ओर कई ऐसी भी जातियाँ हैं, जिनमें ज्यादातर लोग जैन होते हैं और उस जाति का छोटा सा समूह वैष्णव या शैव होता है।

शैव-वैष्णव-जैन : एक बड़ा उदाहरण यह है कि आजकल जितने भी जैन मुनि और साध्वियाँ हैं, उनमें से कई जन्म परिवार से शैव या वैष्णव है, उसी प्रकार आजकल के शैव या वैष्णव साधुओं में कुछ साधू जन्म से जैन है। जैन साधुओं का शैव और वैष्णव तीर्थों पर जाना, प्रवास करना और शैव या वैष्णव साधुओं का जैन तीर्थों पर जाना एक आम बात है।

शैव-वैष्णव-जैन के समन्वय का एक बड़ा उदाहरण है कर्नाटक का प्रसिद्ध शैव तीर्थ क्षेत्र धर्मस्थल। यहाँ भगवान मंजुनाथ का मंदिर है। मंजुनाथ शिव का एक रूप है। शैव मंदिर होने के बावजूद वहाँ भगवान बाहुबली की प्रतिमा होना तथा इसके सर्वोच्च धर्माधिकारी परंपरा से हेग्गडे इस जैन घराने से होते हैं। इस समय के धर्माधिकारी पद्मभूषण राज्यसभा सदस्य डॉ. डी. वीरेंद्र हेग्गडे जी हैं। यह जैन धर्मावलम्बी है, इस मंदिर का व्यवस्थापन वैष्णव लोग करते है।

विशेष बात यह है कि वीरेंद्र हेग्गडे जी बंट समाज से है। बंट समाज कर्नाटक का एक प्रसिद्ध समाज है, जिसे शेट्टी नाम से भी जाना जाता है। बंट समाज में ज्यादातर लोग शैव है, कई लोग वैष्णव भी हैं और कुछ लोग जैन भी है।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

गुरु भागमल जी म. का 54वाँ पुण्य स्मृति दिवस एवं वार्षिकोत्सव समारोह श्रद्धा-भक्ति के साथ भव्य रूप से सम्पन्न

शास्त्री पार्क, दिल्ली : शास्त्री पार्क, दिल्ली स्थित जैन मुनि स्व. श्री भागमल जी महाराज सा. चैरिटेबल हॉस्पिटल में रविवार, 15 मार्च 2026 को परम श्रद्धेय स्वामी श्री भागमल जी महाराज सा. के 54वें पुण्य स्मृति दिवस एवं हॉस्पिटल के वार्षिकोत्सव समारोह का आयोजन सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर विशेष रूप से नेपाल हिन्द गौरव, वाचनाचार्य श्रमण संघीय उपाध्याय प्रवर डॉ. श्री विशालमुनि जी म., संघ रत्न एवं संघ सेतु श्रमण संघीय उपाध्याय प्रवर श्री रवीन्द्रमुनि जी म. तथा राष्ट्रसंत, प्रज्ञा महर्षि पं. रत्न श्री उपेन्द्रमुनि जी म. 'शास्त्री' की पावन उपस्थिति एवं प्रेरक वाणी ने समारोह को आध्यात्मिक ऊँचाइयों तक पहुँचा दिया।

इस अवसर पर श्री ऑल इंडिया श्वेतम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जी जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री संजय जी जैन-पंजाबी बाग, श्री महेन्द्र जी बोकारिया जैन-राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री महावीर प्रसाद जी जैन रिंढ़ाना-राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, श्री नरेश आनन्द प्रकाश जी जैन-राष्ट्रीय अध्यक्ष, ज्ञान प्रकाश योजना, श्री राजीव जैन (सी.ए.)-प्रधान, ऋषभ विहार, श्री रजनीश जी जैन-राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष, श्री अशोक जी जैन खट्टे वाले-महामंत्री, ऋषभ विहार, श्रीमती संतोष जी जैन-राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा, श्री विपुल जी जैन-राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष, श्री नरेश जी जैन 'रिंढ़ाना'-राष्ट्रीय मंत्री, श्री जितेन्द्र जी जैन-प्रान्तीय अध्यक्ष दिल्ली, श्री ललित जी ओसवाल जैन-प्रान्तीय महामंत्री दिल्ली, श्री विनीत जी जैन-प्रान्तीय युवा अध्यक्ष दिल्ली, श्री नरेन्द्र जी जैन-पश्चिम विहार, श्रीमती सीमा जी जैन-प्रान्तीय महिला अध्यक्षा दिल्ली, गुरुभक्त श्री अरुण आर. डी. जी जैन-विवेक विहार, श्री संजय जी जैन-बड़ौत, हाजी समीर मंसूरी-निगम पार्षद, शास्त्री पार्क तथा यमुनापार के अनेक श्रीसंघों के प्रधान महामंत्री सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामय उपस्थिति ने समारोह को और अधिक प्रतिष्ठा प्रदान की।

– राजेश कुमार मिश्र

जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान महिला शाखा द्वारा भगवान महावीर के 2625वें जन्म कल्याणक कार्यक्रमों का प्रारंभ

उदयपुर (राजस्थान) : महावीर जन्म कल्याणक के अवसर पर महामंत्र जाप एवं महावीर पर भजन का आयोजन अग्रवाल हाऊस, नवरत्न काम्प्लेक्स में किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ नवकार महामंत्र के जाप से हुआ। इसके पश्चात नवकार मंत्र की स्तुति एवं भगवान महावीर के भजन प्रस्तुत किए गए। जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांत महिला अध्यक्षा डॉ. पुष्पा जी खोखावत जैन ने सभी का शब्दाभिनंदन किया। प्रथम पुरस्कार पुष्पा जैन, द्वितीय मंजु बाबेल, तृतीय शीतल कोठारी, चतुर्थ पुष्पा खमेसरा, सांत्वना प्रेमलता डांगी, आशा मेहता, अरूणा पारीवाला को प्राप्त हुए। महावीर जन्म कल्याणक की खुशी मनाने में डॉ. पुष्पा जैन खोखावत, मीना इंद्रावत प्रेमलता डांगी, संगीता मेहता, सुमन नलवाया, पुष्पा खमेसरा, आशा मेहता, विद्या पोरवाल, लक्ष्मी धाकड़, आदि सदस्यायें उपस्थित थी।

संतो की नेत्र शल्य चिकित्सा सफल

दिल्ली : संघ सेतु उपाध्याय प्रवर पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा. का जैन स्थानक (गुरु पुष्कर भवन) डेरावाल नगर में आगामी 22 मार्च रविवार तक प्रवास रहा, इस दौरान पू. श्री ऋषभमुनि जी म. का मोतियाबिन्द का ऑपरेशन व पू. श्री अर्हममुनि जी म. का रेटिना का ऑपरेशन सुप्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. राजीव जी जैन से कराया। ऑपरेशन पूर्ण सफल रहा है।

प्रेषक : रजनीश जैन 'राज'

भीलवाड़ा में श्री अम्बेश जैन चिकित्सालय में जारी है नि:शुल्क डायलिसिस

भीलवाड़ा (राजस्थान) : मेवाड़ संघ शिरोमणि पूज्य प्रवर्तक गुरु अम्बेश को समर्पित श्री अम्बेश जैन चिकित्सालय, भीलवाड़ा चिकित्सा सेवा के क्षेत्र में एक जाना-माना नाम बन चुका है। यहाँ विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा स्वधर्मी एवं जरूरतमंद मरीजों का नि:शुल्क डायलिसिस एवं अन्य चिकित्सा सेवा हो रही है। सहयोगी गुरुभक्तों को लाख-लाख धन्यवाद, आपके अमूल्य अवदान से मरीजों की नि:शुल्क चिकित्सा हो रही है। श्री अम्बेश जैन चिकित्सालय, भीलवाड़ा इसी तरह चिकित्सा सेवा के क्षेत्र में नित नये आदर्श आयाम स्थापित करें, यही मंगल मनीषा है।

प्रेषक : कंवरलाल सूर्या जैन

उपाध्याय पूज्य श्री रमेश मुनि जी महाराज का स्वास्थ्य सुधार की ओर...

श्रमण संघीय उपाध्याय पूज्य श्री रमेशमुनि जी म.सा. जो कि गत् माह (19 फरवरी 2026) को अस्वस्थ हो गए थे, उन्हें उपचार हेतु उदयपुर के निजी चिकित्सालय में भर्ती कराया गया था। 26 दिवस अनुभवी चिकित्सकों की देख-रेख में रहने के पश्चात् अब स्वास्थ में सुधार होने के उपरांत 16 मार्च 2026 चिकित्सालय से छुट्टी मिल गई है। विशेषः पूज्य उपाध्याय श्री स्वास्थ्य लाभ हेतु "देवेन्द्र धाम" उदयपुर में विराजमान रहेंगे। यथा समय गुरुभक्त दर्शन का लाभ लें सकते हैं।

जीव दया का लघु कार्य भी अनंत पुण्य प्रदान करेगा

नई दिल्ली : भीषण गर्मी का मौसम प्रारंभ हो गया है और बिना पानी के मासूम पक्षियों का काल धर्म हो जाता है। अतः सभी से निवेदन है कि अपनी छत पर मासूम बेजुबान पक्षियों के लिए पानी अवश्य रखें। जैन धर्म का प्रमुख सिद्धांत अहिंसा जीव दया है। अपनी छतों पर बर्तन में पानी रखें, आप नियमित रूप से रखेंगे तो पक्षियों का भी आना प्रारंभ हो जाएगा। जीव दया के इस महान कार्य में जीवों की रक्षा कर अनंत पुण्य बंध करें।

निवेदक -
जीव दया योजना, जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

अखिल भारतीय श्री जैन दिवाकर संगठन समिति युवा शाखा का राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

उदयपुर (राजस्थान) : अखिल भारतीय श्री जैन दिवाकर संगठन समिति युवा शाखा का राष्ट्रीय अधिवेशन संतों के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। उपाध्याय पू. श्री गौतममुनि म.सा., प्रवर्तक पू. श्री विजयमुनि म.सा. सहित संतों ने समाज में एकता, समर्पण और संगठन की आवश्यकता पर बल दिया। मुख्य वक्ताओं ने जैन दिवाकर पूज्य श्री चौथमल जी म.सा. के त्याग और आदर्शों को युवाओं तक पहुँचाने का आह्वान किया। विधायक श्री ताराचंद जी जैन ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में "मैं जैन हूँ" का भाव होना चाहिए।

प्रज्ञा महर्षि पू. श्री उपेन्द्रमुनि जी म.सा. 'शास्त्री' का जैन भवन में प्रवास

नई दिल्ली : सोमवार दिनांक 16 मार्च 2026 को प्रज्ञा महर्षि पू. श्री उपेन्द्रमुनि जी म.सा. 'शास्त्री' आदि ठाणा 5 का पद जैन भवन, नई दिल्ली में पद विहार हुआ। इ अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जी जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंत जी जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेश जी जैन आदि अनेकों पदाधिकारियों ले पूज्य संतवृंद का स्वागत एवं वंदन, नमन किया। इस त्रिदिवसीय प्रवास के दौरान दिल्ली और आस-पास के शहरों से श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं का दर्शन, वंदन करने हेतु तांता लगा रहा। इस अवसर पर सैकड़ों श्रद्धालु भक्तों की उपस्थिति में नवकार महामंत्र का उच्चारण भी किया गया।

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

स्थानकवासी परंपरा के प्रेरणादायक व्यक्तित्व श्री फतेहलाल जी मारू जैन-निम्बोहड़ा

जैन दिवाकर गुरुदेव चौथमल जी महाराज के सर्वप्रथम दर्शन निम्बाहेड़ा में करने वाले श्री फतेहलाल जी मारू जैन जिन्हें सभी "हाजी साब" के नाम से जानते है आज उनकी उम्र 98 वर्ष की है मगर आवाज आज भी बुलन्द है। मात्र 8 वर्ष की उम्र में गुरुदेव चौथमल जी म. निम्बाहेड़ा पधारे और भरी सभा मे गुरुदेव के समक्ष उन्होंने कविता पढ़ी तो गुरुदेव ने उनके सर पर हाथ रखा। तबसे उन्होंने सैकड़ो कविताएं और कव्वाली लिखी और गायन रूप में प्रस्तुत किया। सिर्फ दो वर्ष से शारीरिक स्वास्थ्य के कारण अपनी सेवाएं संघ समाज को नहीं दे पा रहे है। ऐसे व्यक्तिव के धनी गुरुदेव के भक्त का आशीर्वाद सदा संघ समाज को मिलता रहे। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से आपका हार्दिक अभिनंदन और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए मंगल कामना।

रूस-यूक्रेन युद्ध और अमेरिका ईरान युद्ध से आपने क्या सीखा?

किसी व्यक्ति का एक वाजिब और समझदारी भरा उत्तरः "मेरी सैलरी, मेरा घर, मेरी कार, मेरा व्यवसाय, मेरा बाग, मेरे रिश्ते, मेरा पशुधन - ये सब मेरे हैं केवल तब तक, जब तक मेरा देश सुरक्षित और मजबूत है। अन्यथा, सब कुछ धुएँ की तरह उड़कर खत्म होने में देर नहीं लगेगी।"

रूस-यूक्रेन युद्ध में 20 लाख से अधिक यूक्रेनी लोग अपना सब कुछ छोड़कर दूसरे देशों में शरण लेने के लिए मजबूर हो गए हैं। वे भाग्यशाली हैं कि उनके पास पड़ोसी देश हैं जो उन्हें शरण दे रहे हैं। लेकिन हमारे बारे में क्या? हम भारतीय कहाँ जा सकते हैं? पश्चिम में पाकिस्तान, पूर्व में बांग्लादेश, दक्षिण में हिंद महासागर, उत्तर में चीन और देश के अंदर गद्दारों की कमी नहीं। याद रखिए, हमें शरण देने के लिए कोई दूसरा देश नहीं है, इसलिए सस्ती राजनीति और मुफ्त की चीजों से ऊपर उठकर एक मजबूत राष्ट्र को प्राथमिकता दीजिए। मेरा राष्ट्र ही मेरी सुरक्षा है।

जैन कॉन्फ्रेंस, राजस्थान प्रांतीय महिला शाखा की ओर से भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर निबंध प्रतियोगिता, भाग लेकर जीते आकर्षक पुरस्कार

उदयपुर (राजस्थान) : राजस्थान प्रांतीय महिला शाखा अध्यक्षा डॉ. पुष्पा जी खोखावत जैन के नेतृत्व में विशेष निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। निबंध प्रतियोगिता का विषय "प्रभु महावीर के अहिंसावादी सिद्धांत और आज की विषम परिस्थितियाँ तृतीय विश्व युद्ध की आहट"

प्रतियोगिता के लिए निर्देश : निबंध प्रविष्टि हस्तलिखित होना जरूरी है एवं प्रत्येक प्रविष्टि के लिए अधिकतम शब्द सीमा 200 शब्दों की रहेगी। विजेताओं सहित सभी प्रतिभागियों के लिए हमारे निर्णायकों का निर्णय ही अंतिम एवं मान्य रहेगा। निर्धारित अंतिम तिथि के बाद प्राप्त होने वाली प्रविष्टि स्वीकार नहीं की जाएगी। विजेताओं को नगद राशि पुरस्कार में प्रोत्साहन हेतु प्रदान की जाएगी पुरस्कार प्रदान किए जायेंगे। प्रथम पुरस्कार 1100/- रुपए , द्वितीय पुरस्कार 900/- रुपए, तृतीय पुरस्कार 700/- रुपए एवं पाँच सांत्वना पुरस्कार प्रत्येक को 300/- रुपए प्रदान किए जाएंगे। निबंध भिजवाने की अंतिम तिथि 10 अप्रैल, 2026 है। भेजने का पता Angoor Bala Premchand Bhadaktiya 9,10,11 Shivbadi Mahesh Nagar, Chittorgarh (Rajasthan) - 312 001, Mob. : 98292 27728

प्रेषक : शिल्पा नाहर जैन

प्रवर्तक पूज्य डॉ. राजेंद्रमुनि जी म.सा. के उदयपुर आगमन पर सामूहिक रूप से स्वागत

जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीय महिला शाखा द्वारा श्रमण संघीय प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव डॉ. राजेंद्रमुनि जी म. सा. के उदयपुर आगमन पर सामूहिक रूप से स्वागत हेतु उपस्थित हुए एवं दर्शन का लाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीय महिला अध्यक्षा डॉ. पुष्पा जी खोखावत जैन, महामंत्री डॉ. शिल्पा जी नाहर जैन, मंत्री कल्पना चोरड़ियाजैन, ज्ञान प्रकाश योजना अध्यक्षा श्रीमती पुष्पाजी सुराणा जैन, अल्पसंख्यक योजना अध्यक्ष श्रीमती अनिता जी भंडारी जैन, श्रीमती ललिता जी बाफना जैन, श्रीमती रंजना जी छाजेड़ जैन, जीव दया योजना आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

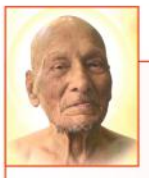

मुनि श्री 108 विष्णुसागर जी म. ने लिया समाधिमरण

झांसी (उत्तर प्रदेश) : पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री प्रदीप जी जैन 'आदित्य' के पिताजी ने पूज्य मुनि श्री 108 विश्वमित सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् समाधिस्थ मुनि श्री 108 विष्णुसागर जी महाराज के रूप में लिया समाधिमरण।

श्री कांतिलाल जी जैन का 54 दिवसीय संथारा संपन्न

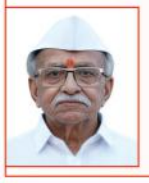

मनमाड़ (महाराष्ट्र) : प्रबल पुण्यवाणी से समता, सजगता और समाधि में स्थित श्रद्धेय वीर कांतिलालजी ललवाणी जैन ने संथारा-सल्लेखना के 54वें दिवस 16 मार्च 2026 को रात्रि 1:15 बजे शांत भाव से वीरगति प्राप्त कर मोक्षमार्ग की दिव्य यात्रा की ओर प्रस्थान किया।

श्रीमति नीलम जी जैन का 20 दिवसीय चौविहार संथारा संपन्न

दिल्ली : पूर्वी दिल्ली के गौतमपुरी में धर्मनिष्ठ श्री प्रवीण जी जैन (दोघट वालो की) धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमति नीलम जी जैन का महासती पू. श्री सुप्रज्ञाश्री जी म. के पावन सान्निध्य में 20 दिन से गतिमान अन्न जल का सम्पूर्ण त्याग चौविहार संथारा पूर्ण हो गया।

श्री लिप्टीराम जी जैन का 10 दिवसीय संथारा संपन्न

बुध विहार, नई दिल्ली : वाचनाचार्य वरिष्ठ उपाध्याय पू. श्री विशालमुनि जी म.सा. की आज्ञा से महासाध्वी पू. श्री संजूजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी पू. श्री उदिता जी म.सा., साध्वी पू. श्री मुदिता जी म.सा. के द्वारा श्री लिप्टीराम जी जैन (मुआना वाले) को 10 मार्च को पूरे होश हवास में संथारा ग्रहण करवाया गया था। साध्वी जी म.सा. प्रतिदिन सुबह और दोपहर को शास्त्र की वाचना प्रदान कर उनकी अंतिम साधना में सहयोगी बनी रही। उनका संथारा 20 मार्च की प्रातः सीज गया।

श्रीमती केलादेवी जी जैन स्वर्गवास

पानीपत (हरियाणा) : दिनांक 11 मार्च 2026 को धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती केलादेवी जी जैन (सहधर्मिणी स्व. श्री हुकमचंद जी जैन) पानीपत का स्वर्गवास हो गया है।

दिवंगत आत्माओं के प्रति जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि

महावीर जयन्ती आयोजन को लेकर दिल्ली मुख्यमंत्री से मिला जैन कॉन्फ्रेंस का प्रतिनिधि मंडल

नई दिल्ली : 21 मार्च 2026 को भगवान महावीर स्वामी के 2625वें जन्म कल्याणक के भव्य आयोजन के संदर्भ में श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के राष्ट्रीय पदाधिकारियों का एक प्रतिनिधिमंडल माननीया मुख्यमंत्री जी से उनके आवास पर मिला। प्रतिनिधिमंडल में राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंत जी जैन, दिल्ली प्रान्तीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन, राष्ट्रीय जनकल्याण योजना के चेयरमैन श्री सुदर्शन जी जैन तथा राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष श्री मुनीश जी जैन प्रमुख रूप से शामिल रहे।

इस अवसर पर श्री जसवंत जी जैन ने संस्था की गौरवशाली ऐतिहासिक परंपरा से अवगत कराते हुए भगवान महावीर जन्म कल्याणक के भव्य आयोजन हेतु स्वीकृति का अनुरोध किया, जिस पर माननीया मुख्यमंत्री जी ने सकारात्मक आश्वासन प्रदान किया। प्रतिनिधि मंडल द्वारा मुख्यमंत्री जी को भगवान महावीर पर आधारित परिचयात्मक पुस्तक 'तीर्थंकर महावीर' भेंट कर सम्मानपूर्वक अभिनंदन किया गया। यह भेंटवार्ता आगामी महावीर जयन्ती आयोजन को और अधिक भव्य एवं व्यवस्थित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगी।

J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

चेयरमैन अभय जैन | महामंत्री अतुल जैन | कोषाध्यक्ष अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9650485980 Email.: foundationjpjain@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

जैन समाज की नवचयनित कार्पोरेटर महिलाओं का सम्मान

चाकण (महाराष्ट्र) : 8 मार्च अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर चाकण जैन स्थानक में जैन कॉन्फ्रेंस पंचम ज़ोन प्रांतीय महिला शाखा की ओर से चाकण के नये कार्पोरेटर महिलाओं का सन्मान तथा सत्कार कार्यक्रम बहुत ही सुंदर, सुचारू रूप से संपन्न हुआ। सत्कार के साथ-साथ गेम्स, स्पीच, डान्स धमाल कार्यक्रम सभी महिलाओं ने आनंद लिया। इस अवसर पर कार्पोरेटर मनीषा ताई गोरे ने कहा कि समाज में अच्छा कार्य करके अपने समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत करों। हर नारी महान है,, लेकिन उसकी महानता महिला दिवस के लिए सीमित ना रखे। हर नारी का हर दिन महान है और नारी हमेशा महान रहेगी। पंचम ज़ोन अध्यक्षा सौ. कल्पनाजी कर्नावट जैन ने अतिथियों का सत्कार सन्मान किया। प्रचार-प्रसार महिला मंत्री सौ. आशाजी खिंवसरा जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा महिला कोषाध्यक्षा सौ. सुनीताजी चोरड़िया ने सभी अतिथियों का आभार प्रस्तुत किया।

बेटी बचाओ अभियान के अंतर्गत डॉ. सौ. सुधाजी प्रकाशजी कांकरिया का सम्मान

अहिल्यानगर (महाराष्ट्र) : भ्रूण हत्या जैसे ज्वलंत समस्या का निवारण के लिए हर पल कार्यरत और समर्पित व्यक्तित्व, राजयोग ध्यान साधिका, लेखिका, कवयित्री डॉ. सौ. सुधाजी प्रकाशजी कांकरिया जैन ने जैन कॉन्फ्रेंस चतुर्थ ज़ोन प्रांतीय महिला अहिल्यानगर शाखा की ओर से नारी शक्ति सम्मान से सम्मानित किया गया। सुधाताई के इस कार्य को दिल से नमन, अनुमोदन, अभिनंदन है। सम्मान करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस चतुर्थ ज़ोन प्रांतीय महिला अध्यक्षा सौ. ज्योति नवनीतजी गांधी जैन, महामंत्री सौ. मनिषा जी मुनोत जैन, उपाध्यक्षा मधुताई जी लोढ़ा जैन, मंत्री सौ. शर्मिला जी बाफना जैन, कार्यकारिणी सदस्या सौ. तृप्ती जी सुंदेचा जैन, सौ. सुवर्णा जी बम्बोरी जैन आदि उपस्थित रहे।

राजस्थान प्रांतीय युवा शाखा कार्यकारिणी की सभा का आयोजन

फतहनगर (राजस्थान) : राजस्थान प्रांतीय युवा शाखा द्वारा फतहनगर में युवाचार्य भगवंत पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा. के राजस्थान मंगल प्रवेश पर अभिनंदन की योजना सहित अनेक विषयों पर संवाद गोष्ठी एवं युवा शाखा की सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 125 से अधिक युवाओं और गुरु भक्तों की भागीदारी रही। युवा शाखा मिटीग में पावनधाम फतहनगर में सोलर सिस्टम का भी शुभारंभ किया गया। उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि शीघ्र ही भव्य युवा अधिवेशन एवं वर्षीतप आराधकों का अभिनंदन करने का भी कार्य किया जाएगा। प्रेषक : निर्मल सिंघवी जैन

कर्नाटक प्रांतीय युवा शाखा द्वारा महामांगलिक कार्यक्रम सम्पन्न

बैंगलोर (कर्नाटक) : 19 मार्च 2026 को नवकार ग्रुप, बैंगलोर द्वारा आयोजित महामांगलिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस कर्नाटक प्रांत के अध्यक्ष श्री प्रकाश जी बुरड़ जैन सहित सभी पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे। इस मौके पर गुरु भगवंतों का मंगलपाठ व आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

प्रेषक : आशीष भंसाली जैन

पानीपत में 130 विद्यार्थियों का वस्त्र वितरण

पानीपत (हरियाणा) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा, हरियाणा व ऊँची सोच (एन.जी.ओ) द्वारा राजकीय प्राथमिक पाठशाला, विकास नगर पानीपत में 130 विद्यार्थियों को वस्त्र वितरण सहयोग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि मेयर कोमल जी सैनी, विशिष्ट अतिथि बिट्टू जी प्रजापति (पार्षद), अजय जी शर्मा (पार्षद), समाजसेवी आशु जी पार्षद पुत्र ने शिरकत की। इस पहल से पता चलता है कि समाज में दूसरे की मदद व सहयोग की भावना बढ़ रही है। विद्यार्थियों को समझाते हुए कहा कि आप भी जीवन में कामयाब होकर जरूरतमंद की मदद करें। प्रेषक : अंश जैन

लुधियाना में पंजाब प्रांतीय युवा शाखा द्वारा भोजन वितरण

लुधियाना (पंजाब) : 7 मार्च को बड़े ही हर्ष, गौरव एवं पुण्य भावना के साथ श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (युवा शाखा), पंजाब जोन-2 की ओर से लॉर्ड महावीर सिविल हॉस्पिटल, फील्ड गंज, लुधियाना में मानव सेवा के तहत भोजन वितरण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। इस सेवा कार्य में अस्पताल में भर्ती मरीजों, उनके परिजनों के साथ-साथ ओपीडी में आए मरीजों को भी प्रेमपूर्वक भोजन वितरित किया गया।

इस पुण्य कार्य के लाभार्थी परिवार श्री नरेश जी जैन-श्रीमती पूनम जी जैन (महामंत्री, एस.एस. जैन सभा, अगरनगर, लुधियाना), श्री हर्षवर्धन जैन-श्री नंदीवर्धन जैन (राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, युवा शाखा, जैन कॉन्फ्रेंस रहे। लाभार्थी परिवार से इस अवसर पर श्री नरेश जी जैन, श्रीमती पूनम जी जैन, श्री सुनील जी जैन, श्रीमती बबीता जी जैन, श्री हर्षवर्धन जी जैन एवं श्रीमती आशिमा जी जैन विशेष रूप से उपस्थित रहे और उन्होंने स्वयं सेवा कार्य में भाग लेकर इस आयोजन को और भी प्रेरणादायक बनाया।

इस अवसर पर युवा शाखा से श्री विनय जी जैन (प्रान्तीय अध्यक्ष), श्री राजीव जी जैन (प्रान्तीय प्रमुख मार्गदर्शक), श्री हर्षवर्धन जी जैन (राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य), श्री जिनेश जी जैन (प्रान्तीय कोषाध्यक्ष), श्री राहुल जी जैन (प्रान्तीय उपाध्यक्ष) एवं श्री लक्की जी जैन उपस्थित रहे।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U (C)

Date of Publication : 21-03-2026
Date of Posting : 28/29-03-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ वर्ष : 70 ✲ अंक : 4
पृष्ठ : 8 ✲ माह : मार्च ✲ सप्ताह : 21 से 27

मूल्य ₹ 10

जैन कन्या पाठशाला, रावलपिंडी

पाकिस्तान में स्थानकवासी जैन समाज की भूली-बिसरी विरासतें

श्री जैन कन्या पाठशाला एक ऐतिहासिक शिक्षण संस्थान हैं, जो विभाजन पूर्व भारत में जैन समुदाय के योगदान को दर्शाता है। इस पाठशाला का निर्माण 1935 में रावलपिंडी के स्थानकवासी जैन संघ द्वारा करवाया गया था। यह रावलपिंडी के ऐतिहासिक भाभरखाना के पास जांगी मोहल्ला में स्थित है।

1947 के विभाजन से पहले यह लड़कियों के लिए रावलपिंडी के सबसे प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में से एक था। जैन समुदाय द्वारा संचालित होने के बावजूद, यहाँ सभी धर्मों की लड़कियों को शिक्षा दी जाती थी। इमारत के माथे पर आज भी स्कूल का नाम तीन भाषाओं-हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी में लिखा हुआ है, जो उस समय की भाषाओं और सांस्कृतिक विविधता का प्रमाण है।

1947 में भारत विभाजन के बाद, रावलपिंडी का जैन समुदाय (भाभरा समुदाय) भारत प्रवास कर गया, जिसके कारण स्थानक, पाठशाला और अन्य संस्थाएँ वहीं छूट गईं। वर्तमान में जैन कन्या पाठशाला की यह इमारत पुरानी और फीकी पड़ गई है, लेकिन यह अभी भी वहाँ खड़ी है और आज भी पाकिस्तान में स्थानकवासी जैन समुदाय के समृद्ध इतिहास की गवाही देती है।

(प्रस्तुति - डॉ. अमितराय जैन)

(क्रमशः अगले अंक में)

केन्द्रीय मंत्री नितिन गड़करी को विहार में साधु-संतों की सुरक्षा हेतु ज्ञापन

पुणे (महाराष्ट्र) : पुणे पिंपरी चिंचवड के थेरगांव में रहने वाले युवा कार्यकर्ता देवेंद्र सुनील पारख जैन ने अपने युवा साथियों के साथ जैन साधु-साध्वी के विहार/प्रवास के दौरान हुए अपघात और अपघात में मृत्यु हुए संतों की व्यथा वर्णन करते हुए सभी जैन साधु-संत, मुनि को विहार/प्रवास काल में पुलिस संरक्षण और बंदोबस्त मिलने बाबत लिखित निवेदन मा. नामदार श्री नितीनजी जयरामजी गडकरी साहेब को प्रदान कर महामार्ग में जलसंपदा, नदी विकास और गंगा पुर्नजीवन केंद्रीय कैबिनेट मंत्री, का सत्कार किया।

जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश द्वारा आयोजित तीन दिवसीय नि:शुल्क मेगा स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

नई दिल्ली : भगवान महावीर जन्म कल्याणक के अवसर पर तीन दिवसीय (20-21-22 मार्च) नि:शुल्क मेगा स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन जैन स्थानक, उत्तरी पीतमपुरा, दिल्ली मे किया गया। अनुभवी डॉक्टरों की देख-रेख में विभिन्न रोगों में दन्त चिकित्सा, आर्थोपैडिक उपचार, डायटिशियन, बी.पी. जाँच आदि से प्रभावित रोगियों की जाँच की गई, जिसका बड़ी संख्या में उपस्थित होकर रोगियों ने लाभ उठाया। शिविर का शुभारम्भ श्री अनिल जी जैन (चाँदनी चौक वाले) पीतमपुरा के शुभ कर-कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर पीतमपुरा क्षेत्र निगम पार्षद श्री अमित जी नागपाल के अलावा जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी जैन, कार्याध्यक्ष श्री राजेश कुमार जी जैन, जैन कॉन्फ्रेंस ज्ञान प्रकाश योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री सुरेश कुमार जी जैन, प्रमुख मार्गदर्शक व उत्तरी पीतमपुरा श्रीसंघ अध्यक्ष श्री जयभगवान जी जैन 'रिठाला', महामंत्री श्री सुरेश जी जैन आदि अनेक महानुभाव उपस्थित रहे।

प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

जैन गौरव

अमर शहीद लाला हुकमचन्द जैन (कानूनगो)

शहीद लाला हुकमचन्द जैन का जन्म 1816 में हांसी (हिसार) हरियाणा के प्रसिद्ध कानूनगो परिवार में श्री टुनीचंद जैन के घर हुआ। आपका गोत्र गोयल और जाति अग्रवाल जैन थी। 1857 को भारतीय विद्रोह की उल्लेखनीय जैन क्रांतिकारियों में से एक थे। लालाजी को फारसी, उर्दू और गणित का अच्छा ज्ञान था। मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर के कार्यकाल में आपने उच्च पद पर काम किया। 11 मई 1857 को अंतिम मुगल सम्राट एवं ईस्ट इंडिया कम्पनी के एक पेंशन भोगी, विद्रोहियों द्वारा सर्वसम्मति से लाला हुकमचन्द जैन को चुना गया एवं हिन्दुस्तान का सम्राट घोषित कर दिया गया। 21 तोपों की सलामी उनके सम्मान में दी गई। लालाजी ने नये सिरे से सैनिकों की भर्ती की और दिल्ली को हथियार, गोला, बारूद भेजने का प्रयत्न किया। लालाजी ने डटकर मुकाबला किया। आखिर में हथियार, गोला, बारूद और मानव शक्ति की कमी के कारण पराजित हो गये। ब्रिटिश सैनिकों ने लालाजी और मिर्जा मुनीर बेग के मकानों पर छापे मारे गये, बहुत तोड़-फोड़ की। दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। मुकदमा चला। 18 जनवरी 1858 को हिसार के मजिस्ट्रेट जौन एकिंसन ने दोनों को फाँसी की सजा सुना दी। 19 जनवरी 1858 को दोनों को फाँसी दे दी गई। 22 जनवरी 1961 को इस शहीद की पावन स्मृति में अमर शहीद हुकमचन्द पार्क की स्थापना की, वहीं आदमकद मूर्ति लगाई गई। भारतवर्ष के इतिहास का वह क्रूरतम अध्याय है। अंग्रेजों ने इनके शव परिजनों को न देकर लालाजी को जैन धर्म के विरुद्ध सफाई कर्मियों द्वारा दफनाया गया और मिर्जा मुनीर बेग के शव को मुस्लिम परम्पराओं के विरुद्ध जला दिया गया।

लालाजी की सम्पत्ति कोड़ियों के भाव नीलाम कर दी गई। उनकी सम्पन्नता का परिचय इसी से मिलता है। उनके पास 9 हजार एकड़ जमीन थी। अन्य वस्तुओं में लगभग 400 तोले सोना, 3300 तोला चाँदी, 1300 चाँदी के सिक्के, 107 मोहरें आदि थी। हरियाणा के प्रसिद्ध कवि श्री उदय भानु हंस ने ठीक ही लिखा है-

हाँसी की सड़क विशाल थी, हो गई लहू से लाल थी।
यह नर-पिशाच का काम था, बर्बरता का परिणाम था।
श्री हुकमचन्द रणवीर था, संग मिर्जा मुनीर बेग था।
दोनों स्वदेश के भक्त थे, जन सेवा में अनुरक्त थे।
कोल्हू में पिसवाये गये, टिकटी पर लटकाये गये।
हिन्दू को दफनाया गया, मुस्लिम शव जलवाया गया।
कितने जन पकड़े घेरकर, फिर बड़-पीपल के पेड़ पर।
कीलों से टँके गरीब थे, ईसा के नये सलीब थे।

आनंद की अविरल धारा

जहाँ करुणा का झरना बहता, जहाँ प्रेम की पावन वाणी,
ऐसे थे श्री आनंदऋषि जी, अध्यात्म की अमर कहानी
मुख पर मंडल सा तेज खिला, नयनों में ममता का सागर,
चलते थे जो पथ पर ऐसे, जैसे करुणा की गागर।।
अहिंसा के तुम ध्वजवाहक थे, संयम की अनमोल मिसाल, जिनके चरणों में झुकता था, श्रद्धा से हर एक भाल।
अहमदनगर की पावन माटी, धन्य हुई पाकर तुमको, सत्य-अहिंसा और धर्म का, पाठ पढ़ाया हम सबको।।
छोड़ गए जो पदचिह्न यहाँ, वे आज भी राह दिखाते हैं, भटके हुए उन मानस को, मानवता का बोध कराते हैं।
ऋषि थे पर राजा सा व्यक्तित्व, त्याग का चोला पहना था, परहित में जीवन होम दिया, बस यही आपका गहना था।।
हे आनंद! हे ऋषिराज! तुम्हें शत्-शत् नमन हमारा है, तुम्हारे पावन दर्शन से, महका ये जग सारा है।

जैन कॉन्फ्रेंस की सदस्यता एवं योजनाओं के फॉर्म के लिए स्कैन करें :

- आजीवन सदस्यता फॉर्म
- जीवन प्रकाश योजना (शिक्षा) फॉर्म
- जीवन प्रकाश योजना (मेडिकल) फॉर्म
- मानव सेवा योजना फॉर्म
- जीव दया योजना फॉर्म

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा
भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की
स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये
प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा
बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स
स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप
30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.
Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906 ✲ अस्वीकरण : समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।